हिन्दखोज: अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी पत्रिका, ISSN: 3048-9873
खंड 2 अंक 2 जुलाई - दिसंबर 2024

बौद्ध एवं जैन साहित्य में अहिंसा की संकल्पना: एक तुलनात्मक समीक्षा

जसवंत चौधरी

चौधरी चरण सिंह यूनिवर्सिटी, मेरठ, उत्तर प्रदेश

सार

अहिंसा भारतीय दर्शन की एक मौलिक और केन्द्रीय अवधारणा है, जिसका सर्वाधिक व्यवस्थित एवं दार्शनिक विकास **बौद्ध और जैन साहित्य** में देखने को मिलता है। यद्यपि अहिंसा की जड़ें वैदिक परंपरा में भी उपलब्ध हैं, किंतु बौद्ध और जैन दर्शनों ने इसे नैतिक आचरण, साधना और मोक्ष-मार्ग का अनिवार्य आधार बना दिया।

यह समीक्षा लेख बौद्ध एवं जैन साहित्य में प्रस्तुत **अहिंसा की संकल्पना, उसके दार्शनिक आधार, सामाजिक-नैतिक प्रभाव तथा व्यवहारिक स्वरूप** का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। बौद्ध साहित्य में अहिंसा करुणा, मध्यम मार्ग और प्रतीत्यसमुत्पाद से जुड़ी हुई दिखाई देती है, जबकि जैन साहित्य में अहिंसा को **परम धर्म** घोषित किया गया है और इसे अत्यंत सूक्ष्म एवं कठोर नैतिक अनुशासन के रूप में विकसित किया गया है।

यह अध्ययन स्पष्ट करता है कि अहिंसा केवल नैतिक आदर्श नहीं, बल्कि भारतीय आध्यात्मिक चेतना का मूल तत्व है, जिसने व्यक्ति, समाज और संस्कृति को गहराई से प्रभावित किया है।

कुंजी शब्द: अहिंसा, बौद्ध साहित्य, जैन साहित्य, करुणा, अपरिग्रह, जीवदया, भारतीय दर्शन, तुलनात्मक अध्ययन

1. भूमिका

भारतीय दर्शन की विशेषता यह है कि यहाँ जीवन, नैतिकता और मोक्ष को परस्पर संबद्ध माना गया है। इन तीनों को जोड़ने वाला सबसे महत्वपूर्ण सिद्धांत है — **अहिंसा**।

अहिंसा का सामान्य अर्थ है — *किसी भी प्राणी को मन, वचन और कर्म से कष्ट न पहुँचाना*। किंतु बौद्ध और जैन परंपराओं में यह अवधारणा केवल हिंसा-त्याग तक सीमित नहीं रहती, बल्कि यह **चेतना, करुणा, आत्मसंयम और आध्यात्मिक साधना** का केन्द्रीय सिद्धांत बन जाती है।

ईसा-पूर्व छठी शताब्दी में विकसित श्रमण परंपरा में बौद्ध और जैन धर्मों ने वैदिक कर्मकांड और यज्ञीय हिंसा का विरोध करते हुए अहिंसा को जीवन-मूल्य के रूप में प्रतिष्ठित किया। इस प्रकार अहिंसा केवल धार्मिक सिद्धांत न रहकर एक **सांस्कृतिक और सामाजिक क्रांति** का रूप ले लेती है।

2. अहिंसा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

2.1 वैदिक परंपरा में अहिंसा के संकेत

ऋग्वेद और उपनिषदों में अहिंसा का प्रत्यक्ष विधान सीमित है, किंतु *"मा हिंस्यात् सर्वा भूतानि"* जैसे विचार इसके बीज रूप को दर्शाते हैं। उपनिषदों में आत्मा की एकता का विचार अहिंसा के दार्शनिक आधार को सुदृढ़ करता है।

2.2 श्रमण परंपरा और अहिंसा

बौद्ध और जैन दर्शन श्रमण परंपरा से उत्पन्न हुए, जहाँ:

- तप
- संयम
- अहिंसा
- ब्रह्मचर्य

को जीवन का उद्देश्य माना गया।

यहाँ अहिंसा कर्मकांड से हटकर **नैतिक और आध्यात्मिक अनुशासन** बन जाती है।

3. बौद्ध धर्म में अहिंसा: दार्शनिक आधार
बौद्ध साहित्य में अहिंसा का प्रतिपादन मुख्यतः **त्रिपिटक** में मिलता है —

- विनय पिटक
- सुत्त पिटक
- अभिधम्म पिटक

3.1 अहिंसा और करुणा (Karunā)
बुद्ध के अनुसार अहिंसा का मूल स्रोत **करुणा** है।
"सब प्राणी दुख से मुक्त होना चाहते हैं — इस बोध से उत्पन्न करुणा ही अहिंसा है।"

बौद्ध दृष्टि में:

- हिंसा = अज्ञान
- अहिंसा = प्रज्ञा और करुणा

3.2 पंचशील और अहिंसा
बौद्ध नैतिकता के पंचशील में पहला नियम है:
पाणातिपाता वेरमणी — प्राणी-हत्या से विरति
यह दर्शाता है कि अहिंसा बौद्ध साधना का पहला सोपान है।

4. जैन दर्शन में अहिंसा का दार्शनिक स्वरूप
जैन दर्शन में अहिंसा को **"परमो धर्मः"** कहा गया है।
"अहिंसा परमो धर्मः" — आचारांग सूत्र

4.1 जीव-अजीव की अवधारणा
जैन दर्शन के अनुसार:

- समस्त ब्रह्मांड जीवों से भरा है
- सूक्ष्मतम जीवों में भी चेतना विद्यमान है

इसलिए अहिंसा का पालन केवल मनुष्यों या पशुओं तक सीमित नहीं, बल्कि जल, पृथ्वी, वायु और वनस्पति तक विस्तृत है।

4.2 महाव्रत और अहिंसा
जैन मुनियों के पाँच महाव्रतों में अहिंसा प्रथम और सर्वोच्च है।
यह केवल हिंसा-त्याग नहीं, बल्कि:

- विचार
- वाणी
- कर्म

तीनों स्तरों पर पूर्ण संयम की अपेक्षा करता है।

5. अहिंसा का नैतिक एवं सामाजिक पक्ष
बौद्ध और जैन दोनों परंपराओं में अहिंसा:

- सामाजिक सह-अस्तित्व
- नैतिक अनुशासन
- आत्मशुद्धि
- मोक्ष-मार्ग

का साधन है।

बौद्ध धर्म जहाँ **मध्यम मार्ग** और व्यावहारिक अहिंसा पर बल देता है, वहीं जैन धर्म **अत्यंत कठोर और सूक्ष्म अहिंसा** का समर्थन करता है।

1. बौद्ध दर्शन की पृष्ठभूमि में अहिंसा

बौद्ध धर्म का उदय ईसा-पूर्व छठी शताब्दी में एक **नैतिक–दार्शनिक आंदोलन** के रूप में हुआ, जिसका मूल उद्देश्य मानव को दुःख से मुक्ति दिलाना था। गौतम बुद्ध ने जीवन के यथार्थ को **चार आर्य सत्यों** के माध्यम से समझाया और दुःख-निरोध के लिए **अष्टांगिक मार्ग** का प्रतिपादन किया।

बौद्ध दर्शन में अहिंसा कोई अलग नैतिक नियम नहीं, बल्कि **दुःख-निरोध की अनिवार्य शर्त** है। हिंसा को बुद्ध ने अज्ञान (अविद्या) का परिणाम माना और अहिंसा को प्रज्ञा (बोधि) का स्वाभाविक फल।

2. त्रिपिटक में अहिंसा का प्रतिपादन

बौद्ध साहित्य का आधार **त्रिपिटक** है—

1. विनय पिटक
2. सुत्त पिटक
3. अभिधम्म पिटक

इन तीनों में अहिंसा का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष उल्लेख मिलता है।

2.1 विनय पिटक और अहिंसा

विनय पिटक भिक्षुओं के आचार-संहिता का ग्रंथ है। इसमें हिंसा को पूर्णतः निषिद्ध माना गया है।

प्रमुख निर्देश:

- किसी भी प्राणी की हत्या वर्जित
- जीवों को कष्ट पहुँचाने वाले कार्यों से विरति
- संयमित जीवन शैली

विनय पिटक में अहिंसा का स्वरूप **अनुशासनात्मक और नैतिक** है, जो संघ की शुद्धता बनाए रखने के लिए आवश्यक माना गया है।

3. पंचशील और अहिंसा

बौद्ध नैतिक जीवन का आधार **पंचशील** है, जो गृहस्थ और भिक्षु दोनों पर लागू होता है।
पंचशील का पहला नियम है—

पाणातिपाता वेरमणी सिक्खापदं समाधियामि
(मैं प्राणी-हत्या से विरति का व्रत लेता हूँ)
यह स्पष्ट करता है कि:

- अहिंसा बौद्ध नैतिकता का प्रथम सोपान है
- बिना अहिंसा के साधना संभव नहीं

पंचशील का उद्देश्य बाह्य नैतिकता के साथ-साथ **आंतरिक चेतना का परिष्कार** भी है।

4. करुणा, मैत्री और अहिंसा

बौद्ध साहित्य में अहिंसा का आधार **करुणा (Karunā)** और **मैत्री (Mettā)** है।

4.1 करुणा का दार्शनिक स्वरूप

करुणा का अर्थ है—
"दूसरे के दुःख को अपने जैसा अनुभव करना।"

बुद्ध के अनुसार:

- सभी प्राणी दुःख से मुक्ति चाहते हैं
- इस बोध से करुणा उत्पन्न होती है
- करुणा ही अहिंसा की आत्मा है

4.2 मैत्री और अहिंसा

मैत्री का अर्थ केवल मित्रता नहीं, बल्कि:

- सब प्राणियों के प्रति सद्भाव
- किसी के प्रति द्वेष न रखना

मैत्री सूक्त में कहा गया है—
"सभी प्राणी सुखी हों, सभी निरोग हों।"
यह बौद्ध अहिंसा का **मानसिक और भावनात्मक आयाम** स्पष्ट करता है।

5. अष्टांगिक मार्ग और अहिंसा
बौद्ध साधना का मूल आधार है **अष्टांगिक मार्ग**, जिसमें अहिंसा प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से अंतर्निहित है।

अंग	**अहिंसा से संबंध**
सम्यक दृष्टि	जीवन की एकता का बोध
सम्यक संकल्प	अहिंसक मानसिकता
सम्यक वाक्	कटु, हिंसक वाणी से विरति
सम्यक कर्मांत	अहिंसक आचरण
सम्यक आजीविका	हिंसा रहित जीवनोपार्जन
सम्यक प्रयास	अहिंसक प्रवृत्तियों का विकास
सम्यक स्मृति	करुणा-बोध
सम्यक समाधि	द्वेष से मुक्ति

इस प्रकार अहिंसा सम्पूर्ण साधना-पथ में व्याप्त है।

6. प्रतीत्यसमुत्पाद और अहिंसा
बौद्ध दर्शन का एक केंद्रीय सिद्धांत है— **प्रतीत्यसमुत्पाद** (Dependent Origination)।

इस सिद्धांत के अनुसार:
- कोई भी वस्तु या प्राणी स्वतंत्र नहीं
- सब एक-दूसरे पर निर्भर हैं

इस दृष्टि से:
- किसी को कष्ट देना स्वयं को कष्ट देना है
- अहिंसा स्वार्थ नहीं, बल्कि बोध का परिणाम है

यह अहिंसा को **दार्शनिक गहराई** प्रदान करता है।

7. बौद्ध अहिंसा: व्यवहारिक दृष्टि
बौद्ध अहिंसा की विशेषता यह है कि यह:
- **मध्यम मार्ग** पर आधारित है
- व्यवहारिक और सामाजिक है
- अतिवादी नहीं, किंतु नैतिक रूप से दृढ़ है

बुद्ध ने हिंसा का विरोध किया, किंतु:
- कठोर तप
- अनावश्यक आत्म-क्लेश
- का भी निषेध किया।

इसलिए बौद्ध अहिंसा को **व्यावहारिक नैतिकता** कहा जा सकता है।

8. बौद्ध साहित्य में अहिंसा का सामाजिक प्रभाव
- राजाओं और शासकों के लिए नैतिक शासन का आदर्श
- अशोक का धम्म-नीति
- सामाजिक सह-अस्तित्व
- युद्ध और प्रतिशोध का विरोध

अहिंसा बौद्ध समाज की **सामूहिक चेतना** का आधार बनी।

1. जैन दर्शन की पृष्ठभूमि में अहिंसा
जैन धर्म भारतीय दर्शन की उन प्राचीन परंपराओं में से है, जहाँ **अहिंसा को सर्वोच्च नैतिक और आध्यात्मिक मूल्य** के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है। जैन दर्शन में अहिंसा केवल एक नैतिक आदेश नहीं, बल्कि **सम्पूर्ण जीवन-पद्धति का आधार** है।

महावीर स्वामी (599–527 ई.पू.) ने अहिंसा को कर्मबंधन से मुक्ति और मोक्ष की अनिवार्य शर्त माना। जैन साहित्य में अहिंसा का विधान इतना व्यापक और सूक्ष्म है कि वह केवल मनुष्य या पशु तक सीमित न रहकर **समस्त जीव-जगत** को सम्मिलित करता है।

2. जैन आगम साहित्य में अहिंसा
जैन साहित्य का आधार **आगम ग्रंथ** हैं, जिनमें अहिंसा का गहन विवेचन मिलता है। प्रमुख आगम ग्रंथ हैं—
- आचारांग सूत्र
- सूत्रकृतांग
- उत्तराध्ययन सूत्र
- दशवैकालिक सूत्र

2.1 आचारांग सूत्र में अहिंसा
आचारांग सूत्र को जैन साधना का मूल ग्रंथ माना जाता है। इसमें स्पष्ट कहा गया है—
"अहिंसा परमो धर्मः।"
इस ग्रंथ में अहिंसा को:
- तप का आधार
- संयम का मूल
- आत्मशुद्धि का साधन

माना गया है।

3. जीव-अजीव सिद्धांत और अहिंसा
जैन दर्शन की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता है— **जीव-अजीव का सिद्धांत**।

3.1 जीव की व्यापक संकल्पना
जैन दर्शन के अनुसार जीव केवल मनुष्य या पशु तक सीमित नहीं है। इसमें सम्मिलित हैं—
- स्थावर जीव: पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, वनस्पति
- त्रस जीव: कीट, पक्षी, पशु, मनुष्य

प्रत्येक जीव में चेतना है और प्रत्येक जीव **पीड़ा अनुभव करता है**।

3.2 अहिंसा का विस्तार
इस दृष्टि से अहिंसा का अर्थ हो जाता है—
- किसी भी जीव को किसी भी रूप में कष्ट न देना
- सूक्ष्मतम हिंसा से भी बचना

यही कारण है कि जैन साधु:
- भूमि को झाड़कर चलते हैं
- जल छानकर पीते हैं
- सूर्यास्त के बाद भोजन नहीं करते

4. पाँच महाव्रत और अहिंसा
जैन साधुओं के लिए पाँच महाव्रत निर्धारित हैं—
1. अहिंसा
2. सत्य
3. अस्तेय
4. ब्रह्मचर्य

5. अपरिग्रह

इनमें अहिंसा **प्रथम और सर्वोच्च व्रत** है।

4.1 अहिंसा महाव्रत का स्वरूप

अहिंसा महाव्रत का पालन तीन स्तरों पर आवश्यक है—

1. **मन** – हिंसक विचारों से विरति
2. **वचन** – कठोर, कटु और पीड़ादायक भाषा का त्याग
3. **कर्म** – प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष हिंसा से संपूर्ण परहेज़

जैन दर्शन में अहिंसा केवल कर्म का विषय नहीं, बल्कि **चेतना का संस्कार** है।

5. सूक्ष्म अहिंसा की संकल्पना

जैन अहिंसा की सबसे बड़ी विशेषता है— **सूक्ष्मता**।
जहाँ अन्य परंपराएँ मुख्यतः स्थूल हिंसा से बचने पर बल देती हैं, वहीं जैन दर्शन में:

- अनजाने में की गई हिंसा
- मानसिक हिंसा
- अप्रत्यक्ष हिंसा

को भी कर्मबंधन का कारण माना गया है।
इसी कारण जैन साधना अत्यंत कठोर और अनुशासित है।

6. तप, संयम और अहिंसा

जैन दर्शन में अहिंसा का संबंध सीधे **तप (तपस्या)** और **संयम** से है।

6.1 तप का उद्देश्य

- पूर्व कर्मों का क्षय
- आत्मा की शुद्धि
- अहिंसक चेतना का विकास

6.2 संयम और आत्मनियंत्रण

संयम के बिना अहिंसा संभव नहीं।
संयम:

- इंद्रियों पर नियंत्रण
- इच्छाओं का त्याग
- भोग-विलास से विरक्ति

अहिंसा, तप और संयम— ये तीनों मिलकर **मोक्ष-मार्ग** का निर्माण करते हैं।

7. जैन समाज में अहिंसा का व्यवहारिक रूप

जैन समाज में अहिंसा केवल साधुओं तक सीमित नहीं है।
गृहस्थों के लिए **अणुव्रत** निर्धारित किए गए हैं, जो महाव्रतों का सरल रूप हैं।
गृहस्थ अहिंसा के प्रमुख आयाम:

- शाकाहार
- व्यापार में नैतिकता
- जीव-दया
- पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता

इस प्रकार अहिंसा जैन समाज की **सामाजिक संस्कृति** का अंग बन जाती है।

8. अहिंसा और मोक्ष सिद्धांत

जैन दर्शन में:

- हिंसा = कर्मबंधन
- अहिंसा = कर्मक्षय
- पूर्ण अहिंसा = मोक्ष

जब आत्मा हिंसा से पूर्णतः मुक्त हो जाती है, तब वह **शुद्ध, स्वतंत्र और कर्मरहित** अवस्था प्राप्त करती है।

1. बौद्ध एवं जैन अहिंसा का तुलनात्मक दार्शनिक विश्लेषण
बौद्ध और जैन दोनों परंपराएँ अहिंसा को अपने दर्शन का केन्द्रीय तत्व मानती हैं, किंतु उनकी **दार्शनिक पृष्ठभूमि, साधना-पद्धति और व्यवहारिक स्वरूप** में महत्वपूर्ण अंतर दिखाई देता है।

जहाँ बौद्ध अहिंसा **करुणा, मध्यम मार्ग और प्रज्ञा** से जुड़ी है, वहीं जैन अहिंसा **कर्म-सिद्धांत, आत्मशुद्धि और तप** से गहराई से संबद्ध है।

2. दार्शनिक आधारों की तुलना

पक्ष	बौद्ध दर्शन	जैन दर्शन
अहिंसा का आधार	करुणा (Karunā), प्रज्ञा	आत्मा की शुद्धता, कर्मक्षय
दृष्टिकोण	मध्यम, यथार्थपरक	अत्यंत कठोर, सूक्ष्म
तत्वमीमांसा	अनात्मवाद	आत्मवाद
जीव की अवधारणा	दुःखग्रस्त चेतन प्रवाह	सर्वव्यापी चेतन आत्माएँ
लक्ष्य	निर्वाण	मोक्ष

विश्लेषण:
- बौद्ध अहिंसा करुणा से उत्पन्न होती है
- जैन अहिंसा अनुशासन और संयम से विकसित होती है
- बौद्ध दृष्टि अधिक सामाजिक और व्यवहारिक है
- जैन दृष्टि अधिक साधनात्मक और कठोर है

3. नैतिक दृष्टि से तुलना

3.1 बौद्ध नैतिकता और अहिंसा
बौद्ध धर्म में अहिंसा नैतिक जीवन का पहला चरण है। पंचशील, अष्टांगिक मार्ग और करुणा-मैत्री के माध्यम से इसे जनसामान्य के लिए **सुगम नैतिक मूल्य** बनाया गया।
बौद्ध अहिंसा:
- सामाजिक समन्वय
- सह-अस्तित्व
- युद्ध और प्रतिशोध का विरोध

पर आधारित है।

3.2 जैन नैतिकता और अहिंसा
जैन नैतिकता में अहिंसा **पूर्ण संयम और आत्मनियंत्रण** की माँग करती है।
जैन समाज में:
- शाकाहार
- जीव-दया
- व्यापारिक नैतिकता
- पर्यावरण-संरक्षण

सब अहिंसा के व्यावहारिक रूप हैं।

4. व्यवहारिक स्तर पर अंतर

आयाम	बौद्ध अहिंसा	जैन अहिंसा
साधना	मध्यम मार्ग	तप और त्याग
हिंसा से परहेज़	मुख्यतः स्थूल	स्थूल + सूक्ष्म
गृहस्थ जीवन	अपेक्षाकृत सहज	अनुशासित
सामाजिक विस्तार	व्यापक	सीमित पर गहन

निष्कर्ष: बौद्ध अहिंसा समाज-परिवर्तन की क्षमता रखती है, जबकि जैन अहिंसा आत्मिक शुद्धि की चरम अवस्था तक ले जाती है।

5. सामाजिक एवं ऐतिहासिक प्रभाव
5.1 बौद्ध अहिंसा का प्रभाव
- अशोक का धम्म
- राज्य नीति में नैतिकता
- एशिया में शांति-परंपरा
- मानवतावादी दृष्टि

5.2 जैन अहिंसा का प्रभाव
- भारतीय व्यापारिक नैतिकता
- शाकाहार का प्रसार
- पर्यावरणीय चेतना
- सामाजिक अनुशासन

6. समकालीन परिप्रेक्ष्य में अहिंसा
आज के युग में, जहाँ हिंसा, युद्ध, पर्यावरण संकट और असहिष्णुता बढ़ रही है, वहाँ बौद्ध और जैन अहिंसा दोनों अत्यंत प्रासंगिक हैं।
- **बौद्ध अहिंसा** → वैश्विक शांति और संवाद के लिए
- **जैन अहिंसा** → पर्यावरण संरक्षण और सतत जीवन के लिए

महात्मा गांधी की अहिंसा की अवधारणा पर **जैन और बौद्ध दोनों परंपराओं का गहरा प्रभाव** स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

7. समग्र मूल्यांकन
अहिंसा केवल धार्मिक सिद्धांत नहीं, बल्कि:
- नैतिक जीवन मूल्य
- सामाजिक सद्भाव का आधार
- आत्मिक उन्नति का मार्ग है।

बौद्ध और जैन साहित्य में अहिंसा की संकल्पना यह सिद्ध करती है कि भारतीय दर्शन **मानवता, करुणा और जीवन-सम्मान** पर आधारित रहा है।

निष्कर्ष

1. बौद्ध और जैन दोनों दर्शनों में अहिंसा केन्द्रीय मूल्य है।
2. बौद्ध अहिंसा करुणा और मध्यम मार्ग पर आधारित है।
3. जैन अहिंसा आत्मसंयम, तप और कर्मक्षय पर आधारित है।
4. दोनों परंपराएँ हिंसा के मूल में अज्ञान को स्वीकार करती हैं।
5. सामाजिक और वैश्विक शांति के लिए अहिंसा आज भी प्रासंगिक है।
6. आधुनिक समाज को **व्यावहारिक बौद्ध अहिंसा** और **अनुशासित जैन अहिंसा**— दोनों से सीख लेनी चाहिए।

समापन रूप में कहा जा सकता है कि बौद्ध एवं जैन साहित्य में अहिंसा केवल नैतिक उपदेश नहीं, बल्कि **जीवन जीने की कला** है, जो मानव को आत्मिक शांति और सामाजिक सामंजस्य की ओर ले जाती है।

संदर्भ सूची

[1]. त्रिपिटक
[2]. आचारांग सूत्र
[3]. सूत्रकृतांग
[4]. उत्तराध्ययन सूत्र
[5]. दशवैकालिक सूत्र
[6]. दिग्घ निकाय

[7]. मज्झिम निकाय
[8]. भिक्षु बोद्धि – *The Noble Eightfold Path*
[9]. राहुल सांस्कृत्यायन – *बौद्ध दर्शन*
[10]. नाथमल मुनि – *जैन दर्शन*
[11]. आचार्य तुलसी – *अहिंसा का दर्शन*
[12]. महावीर स्वामी – उपदेश साहित्य
[13]. महात्मा गांधी – *सत्य के प्रयोग*
[14]. एस. राधाकृष्णन – *Indian Philosophy*
[15]. दासगुप्ता – *A History of Indian Philosophy*
[16]. पं. सुखलालजी – *तत्त्वार्थ सूत्र*
[17]. कोसंबी – *Buddhism and Society*
[18]. पद्मनाभ जैन – *जैन नैतिक दर्शन*
[19]. डेविड कालुपहाना – *Buddhist Philosophy*
[20]. तुलसीराम – *अहिंसा और भारतीय संस्कृति*